और बेर अब कछू नहीं, गयो तिमर सब नास।
होसी सब में आनन्द, चौदे तबक प्रकास।। २२ ।।

अब और कोई देरी नहीं है, अन्धकार तो मिट गया है। चौदह लोकों में यह ज्ञान फैल जाएगा तो सब की अज्ञानता हट जाएगी और सबको आनन्द का सुख मिलेगा।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ २२६ ॥

सोहागनियों के लछन

पार वतन जो सोहागनी, ताकी नेक कहूं पेहेचान।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान।। १ ।।

अक्षर के पार रहने वाली जो ब्रह्मसृष्टियां हैं (वह खेल देखने यहां आई हैं), उनकी थोड़ी सी पहचान कराती हूं। संसार में आकर भले वह अपने घर परमधाम को भूल गई हैं फिर भी उनकी सुरता परमधाम में ही रहती है।

आसिक प्यारी पिउ की, कोई प्रेम कहो विरहिन।
ताए कोई दरदन कहो, ए लछन सोहागिन।। २ ।।

यह अपने पिया की प्यारी विरहिणी हैं। इनको ही केवल उस परब्रह्म प्रीतम से मिलने की तड़प है। इनसे ही सुहागिन की पहचान होती है।

रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन।
पर पकरी पिया ने अंतर, नातो रहे न तन।। ३ ।।

परब्रह्म की यह अंगनाएं अपने धनी के बिना कैसे रह सकती हैं? यह उनके अंग हैं। धनी ने ही अन्दर से अपनी शक्ति से ही यहां रोक रखा है। नहीं तो इनकी पहचान होने के बाद अपने तनों को तुरन्त छोड़ देतीं।

ऊपर काहूं न देखावहीं, जो दम न ले सके खिन।
सो प्यारी जाने या पिया, या विध अनेक लछन।। ४ ।।

ऐसी व्याकुल ब्रह्मसृष्टियां ऊपर का दिखावा नहीं करतीं। एक पल भी विरह सहन नहीं कर सकतीं। इनके विरह को धनी जानते हैं या वह जानती हैं। इस तरह से ब्रह्मसृष्टियों की पहचान के कई लक्षण हैं।

आकीन न छूटे सोहागनी, जो परे अनेक विघन।
प्यारी पिउ के कारने, जीव को न करे जतन।। ५ ।।

कितने भी कष्ट क्यों न आएं सुहागिनियों का यकीन नहीं छूट सकता। वह अपने पिया के वास्ते अपने जीव तक की भी कुर्बानी करने में पीछे नहीं हटतीं।

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन।
साफ दिल सोहागनी, कबहूं न दुखावे किन।। ६ ।।

इनका पहनावा और खाना-पीना साधारण होता है। इनके दिल निर्मल होते हैं। यह कभी भी किसी को दुखाती नहीं हैं।

ओ खोजे अपने आप को, और खोजे अपनो घर।
और खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर।। ७ ।।

यह अपने आप की, अपने घर की और अपने प्रीतम की और आखिर के दिन की खोज में तब तक लगी रहती हैं जब तक उनको प्राप्त नहीं कर लेतीं।

Nijanand App

खोज सोहागिन ना थके, जोलों पार के पारै पार।
नित खोजे चरनी चढ़े, नए नए करे विचार।।८।।

सुहागिनियां क्षर के पार अक्षर और अक्षर के पार परब्रह्म के धाम की खोज में सदा लगी रहती हैं और थकती नहीं हैं। नित्य नए-नए विचारों से खोज करती हैं और आगे बढ़ती हैं।

खोज खोज और खोजहीं, आद के आद अनाद।
पल पल सब्द प्रकास हीं, श्रवणों एही स्वाद।।९।।

सुहागिनियां, आदि नारायण तथा उनके बनाने वाले अक्षरब्रह्म और उससे आगे परब्रह्म को खोजती ही रही हैं। उनको धर्म ग्रन्थों के शब्दों से खोज करती हैं और उनको खोज के ज्ञान के बिना कुछ और सुनना अच्छा ही नहीं लगता।

सोहागिन तोलों खोज हीं, जोलों पाइए पिउ वतन।
पिउ वतन पाए बिना, विरहा न जाए निसदिन।।१०।।

सुहागिनियां तब तक खोज में लगी रहती हैं जब तक घर और प्रीतम मिल नहीं जाते। प्रीतम और घर (परमधाम) पाए बिना उनका विरह नहीं हटता।

ओतो आगे अंदर उजली, खिन खिन होत उजास।
देह भरोसा ना करे, पिया मिलन की आस।।११।।

वह तो अन्दर से निर्मल होती हैं। पल-पल उनको और जानकारी मिलती है, पल-पल पिया से मिलने की आशा में वह अपने तन की भी चिन्ता नहीं करतीं।

विचार विचार विचारहीं, बेधे सकल संधान।
रोम रोम ताए भेदहीं, सत सब्द के बान।।१२।।

धर्म ग्रन्थों में जो सत परब्रह्म की पहचान लिखी है, वह सुनकर उस पर बार-बार विचार करती हैं और यह शब्द बाण की तरह उनके अंगों को छेदते हैं।

पार वतन के सब्द, अंगमें जो निकसे फूट।
गलित गात सब भीगल, पिया सब्दें होए टूक टूक।।१३।।

अक्षर के पार घर के शब्दों से उनके अंगों में उल्लास भर जाता है और पिया की वाणी सुनकर गलित गात होकर कुर्बानी के लिए तैयार रहती हैं।

खिन खेले खिन में हंसे, खिन में गावे गीत।
खिन रोवे सुध ना रहे, ए सोहागिन की रीत।।१४।।

वह पिया के विरह में बावरी होकर पल में खेलती हैं, पल में हंसती हैं और पल में गीत गाती हैं। दूसरे पल ऐसा रोती हैं कि उनको सुध ही नहीं रहती। यह सुहागिनियों के लक्षण हैं।

पिउ बातें खेलें हंसे, गीत पिया के गाए।
रोवें उरझे पिउ की, बातनसों मुरछाए।।१५।।

पिया की बातें सुनकर खेलती हैं, हंसती है और धनी के गीत गाती हैं। पिया की याद में ही वह रोती हैं, बिलखती हैं और उनकी बातें सुनकर बेहोश रहती हैं।

Nijanand App

सोहागिन विरहा ना सहे, जब जाहेर हुए पिउ।
सोहागिन अंग जो पिउ की, पिउ सोहागिन अंग जिउ।। १६ ।।

प्रीतम की पहचान होने पर वह पिया का विरह सहन नहीं कर सकतीं क्योंकि सुहागिनियां अपने पिया के अंग हैं और पिया ही सुहागिन का जीवन हैं।

जोलों पिउ सुध ना हुती, सोहागिन अंग में पिउ।
जब पिया जाहेर हुए, तब ले खड़ी अंग जिउ।। १७ ।।

जब तक पिया की खबर नहीं थी, तब तक पिया सुहागिन के अन्दर ही थे। जब अपने प्राणनाथ की पहचान हो गई तो अपने प्रीतम से मिलने के लिए खड़ी हो गई।

जो होए सैयां सोहागनी, सो निरखो अपने निसान।
वचन कहे मैं जाहेर, सोहागनियों पेहेचान।। १८ ।।

अब जो कोई पिया की विरहिणी हो वह अपने आपकी पहचान करे। मैंने अपने स्पष्ट शब्दों में सुहागिनियों की पहचान बता दी है।

बोहोत निसानी और हैं, प्रेम सोहागिन गुझ।
जब सैयां जाहिर हुई, तब होसी सबों सुझ।। १९ ।।

अभी सुहागिनियों की पहचान की और भी बहुत बातें हैं। वह अपने प्रेम को छिपाकर रखती हैं। जब सब ब्रह्मसृष्टियां जाहिर हो जाएंगी तो उनको भी एक-दूसरे की पहचान हो जाएगी।

तुम हो सैयां सोहागनी, ए समझ लीजो दिल बूझ।
जब सैयां भेली भई, तब होसी बड़ा गूझ।। २० ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! तुम ही सुहागिनियां हो, यह दिल में पक्का समझ लेना। जब सब सुन्दरसाथ इकट्ठे होंगे तब यह सब रहस्य जाहिर होंगे।

ए सब्द जो कहती हों, सो कारन सब सैयन।
सोहागिन ढांपी ना रहे, सुनते एह वचन।। २१ ।।

मैंने यह जो कुछ कहा है सब ब्रह्मसृष्टि के लिए ही कहा है। यह वचन सुनकर ब्रह्मसृष्टि छिपी नहीं रहेगी।

ए सब्द सुन सोहागनी, रहे ना सके एक पल।
तामें मूल अकूंर को, रहे ना पकड़यो बल।। २२ ।।

सुहागिनियां इन वचनों को सुनकर एक पल भी माया में नहीं रह सकतीं, क्योंकि इनकी परात्म परमधाम में है। आत्मा उनके इन तनों में है। अतः धनी से मिलने की तड़प को रोका नहीं जा सकता।

जब खसम की सुध सुनी, तब रहे ना सोहागिन।
ख्वाबी दम भी ना रहे, तो क्यों रहे सैयां चेतन।। २३ ।।

प्रीतम की सुध होने पर सुहागिन रह नहीं सकती। जब संसार के सपने के जीव नहीं रह सकते तो सदा अखण्ड रहने वाली ब्रह्मसृष्टियां कैसे रह सकती हैं?

मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी तुम।
या विध सब सैयन का, तसीहा लेवें खसम।। २४ ।।

मैं तुमको सावधान कर रही हूं कि यही तुम्हारी परख भी है। धनी भी खेल में अपनी आत्माओं की परीक्षा ले रहे हैं।

Nijanand App

जो हुकम सिर लेय के, उठी ना अंग मरोर।
पिया सैयां सब देखहीं, तुम इस्क का जोर।। २५ ।।

जो धनी के हुक्म को सिर चढ़ाकर और आलस्य को एक किनारे फेंककर नहीं उठी तो धनी और दूसरे सुन्दरसाथ उसके इश्क पर हंसेंगे।

जो सुन के दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर।
जैसा इस्क जिन पे, सो अब होसी जाहिर।। २६ ।।

जो इन वचनों को भी सुनकर नहीं दौड़ी तो उस पर हंसी होगी। अब किस में धनी का कितना इश्क है, यह जाहिर हो जाएगा।

जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार।
दरद बिना दुख होएसी, सो जानों निरधार।। २७ ।।

जो इस समय धनी के इश्क को लेकर परस्पर (इकट्ठी होंगी) मिलेंगी उन्हें अपार सुख होगा, परन्तु यह निश्चित है कि उनको शारीरिक कष्ट के बिना आत्मा में पिया से मिलने की तड़प का बहुत दुःख होगा।

जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे।
सो इत लोक अलोक का, कछू न लाहा ले।। २८ ।।

ऐसे अवसर पर भी जिसने भूल की और एकाग्रचित्त होकर नहीं जागी, उसे संसार में और परमधाम में कहीं भी लाभ नहीं मिलेगा।

लाहा तो ना लेवहीं, पर सामी हांसी होए।
अब ए हांसी सोहागनी, जिन कराओ कोए।। २९ ।।

लाभ तो मिलेगा नहीं ऊपर से हंसी और होगी, इसलिए हे सुहागिन! अपने ऊपर हंसी मत करवाओ।

जिन उपजे सैयन को, इन हांसी का भी दुख।
ए दुख बुरा सोहागनी, जो याद आवे मिने सुख।। ३० ।।

अपनी ब्रह्मसृष्टियों को इस शर्मिंदा करने वाली हंसी का भी दुःख न हो, इसलिए सावधान करती हूं, क्योंकि अखण्ड सुख में यह शर्मिंदा करने वाली हंसी दुःख देगी।

ए दुख तो नेहेचे बुरा, मेरी सैयोंपे सह्यो न जाए।
जो कदी हांसी ना करे, पर जिन हिरदे चढ़ आए।। ३१ ।।

इस शर्मिंदा करने वाली हंसी का दुःख निश्चित ही बुरा है जो मेरी ब्रह्मसृष्टियों से सहन नहीं होगा। यदि कोई जाहिरी हंसी न भी करे और हृदय में उसकी याद ही आ गई तो दुःख होगा। मैं यह भी नहीं चाहती कि हमारे सुन्दरसाथ को ऐसा भी दुःख देखना पड़े।

जिन जुबां मैं दुख कहूं, सोए करूं सत टूक।
पर ए दुख जिन तुमें लागहीं, तो मैं करत हों कूक।। ३२ ।।

जिस जबान से मैं सुन्दरसाथ के दुःख की बात करती हूं उस जबान के सौ टुकड़े कर दूं, इसलिए पुकार कर रही हूं कि तुम्हें ऐसा दुःख कभी भी न हो।

Nijanand App

जो दुख मेरी सैयन को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोए।। ३३ ।।

यदि मेरे सुन्दरसाथ को किसी प्रकार का भी दुःख होता है तो मुझे कैसे सुख हो सकता है, क्योंकि हम सभी एक घर के हैं तथा एक श्यामाजी के अंग हैं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। २५९ ।।

भी कहूं मेरी सैयन को, जो हैं मूल अंकूर।
सो निज वतनी सोहागनी, पिया अंग निज नूर।। १ ।।

मैं अपने सुन्दरसाथ को जो परमधाम के निसबती (सम्बन्धी) हैं और मेरे घर की सुहागिनियां हैं, हम एक धनी की अंगना हैं, इसलिए और भी कहती हूं।

पार पुरुख पिया एक है, दूसरा नाहीं कोए।
और नार सब माया, यामें भी विध दोए।। २ ।।

अक्षर के पार पुरुष तो केवल हमारे धनी ही हैं और दूसरा पुरुष तो कोई है ही नहीं। यहां पर तो सारा माया का ब्रह्माण्ड है। उसमें भी दो तरह की सृष्टियां हैं।

जो रूह असलू ईश्वरी, दूजी रूह सब जहान।
पर रूह न्यारी सोहागनी, सो आगे कहूंगी पेहेचान।। ३ ।।

एक तो ईश्वरी सृष्टि की आत्माएं हैं और दूसरी संसार सब जीव सृष्टि का है। इन दोनों से ब्रह्मसृष्टि अलग है। इनकी पहचान आगे कहती हूं।

सैयां सुख निज वतनी, ईश्वरी को सुख और।
दुनी भी सुख होसी सदा, आगे कहूंगी तीनों ठौर।। ४ ।।

ब्रह्मसृष्टि के यहां आने पर घर का सुख है। ईश्वरी सृष्टि को और दूसरे तरीके का सुख है। दुनियां की भी अखण्ड मुक्ति होगी। आगे तीनों के ठिकाने बताऊंगी।

ए लछन सैयां अंकूरी, जो होसी इन घर।
ए वचन वतनी सुनके, आवत हैं तत्पर।। ५ ।।

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होगी उनके लक्षण इस तरह से होंगे कि वह अपने घर की बात सुनते ही माया को छोड़कर पिया के चरणों में आ जाएगी।

अटक रह्या साथ आधा, जिनो खेल देखन का प्यार।
ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार।। ६ ।।

हमारे आधे सुन्दरसाथ यहां तामसी स्वभाव के हैं। इनको खेल देखने की इच्छा बाकी थी। यह ब्रह्माण्ड उनके लिए ही बनाया गया है।

भूल गईयां खेल में, जो सैयां हैं समरथ।
प्रकास पिया का मुझ पे, कहे समझाऊं अर्थ।। ७ ।।

ऐसे समर्थ मोमिन खेल में आकर भूल गए हैं। श्री प्राणनाथजी का ज्ञान मेरे पास है। इसे समझाकर कहूंगी।

Nijanand App